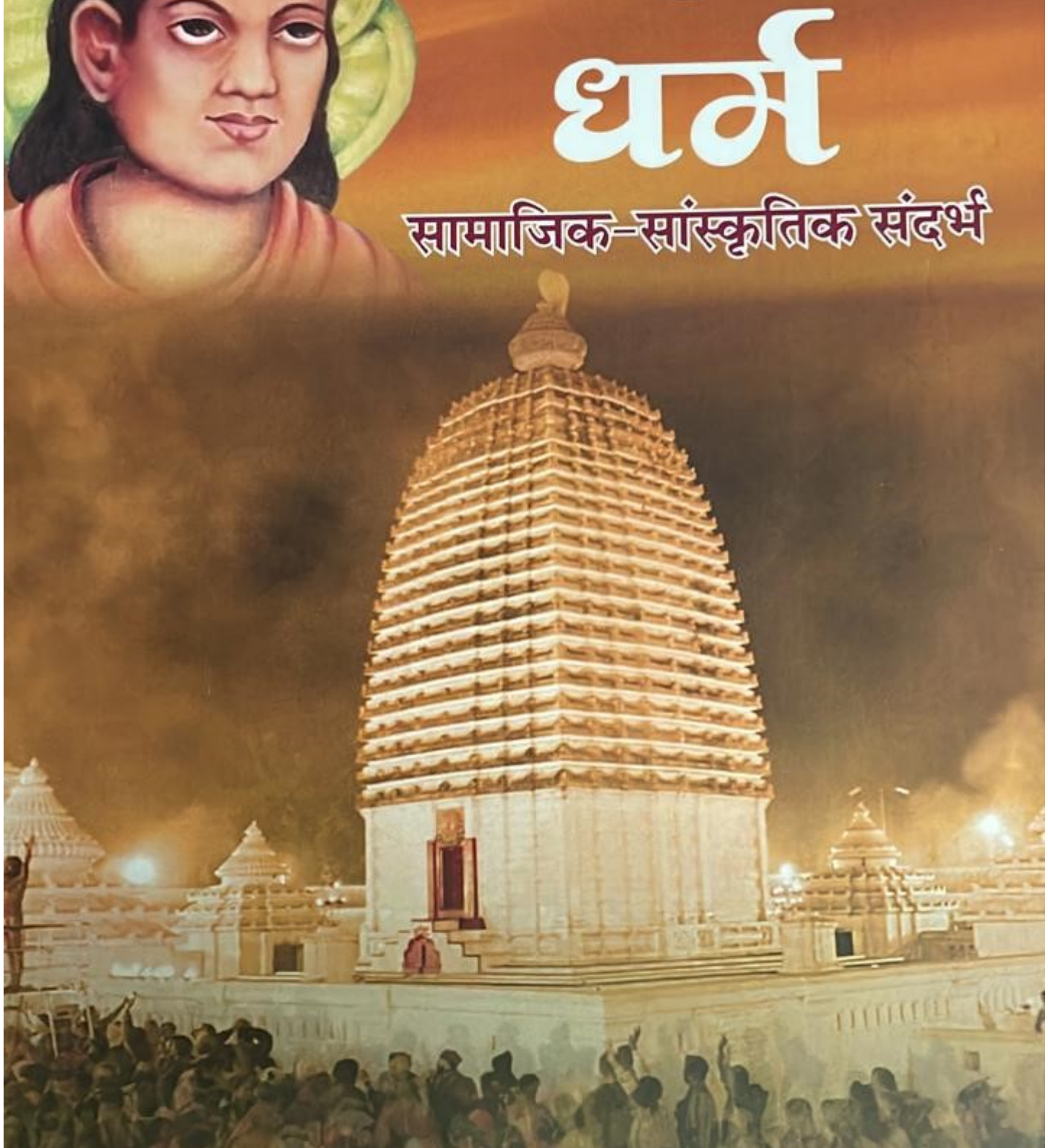
धर्म
सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

महिमा धर्म

सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ

संपादक

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

कुलपति

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

सह-संपादक

प्रो. देवेन्द्रनाथ सिंह

डॉ. गौरी त्रिपाठी

संपादक-मंडल

प्रो. अनुपमा सक्सेना

मुरली मनोहर सिंह

डॉ. अखिलेश गुप्ता

प्रो. प्रवीन कुमार मिश्रा

डॉ. रमेश कुमार गोहे

डॉ. अनीश कुमार

किताबवाले

नयी दिल्ली-110002

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

	संदेश	**5**
	संदेश	**7**
	संदेश	**9**
	सम्पादकीय	15
	महिमा गुरु : धार्मिक नवजागरण का लोक स्वर	
	प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल	
1.	भीमा भोई की कविताएं (छंदानुवाद)	22
	प्रो. देवेंद्र नाथ सिंह	
2.	महिमा गुरु : धर्म का लोकतन्त्र	31
	अवधेश प्रधान	
3.	महिमा धर्म : विचार, प्रवाह एवं सामाजिक प्रभाव	42
	प्रो. परमेन्द्र कुमार बाजपेयी	
4.	सत्य सनातन महिमा धर्म का इतिहास	47
	अवधूत बीरेंद्र कुमार बाबा	
5.	महिमाधर्म में गृहस्थ आश्रम	55
	साधु निर्मायानंद दास	
6.	महिमा धर्म में नीति-नियम	59
	साधु विशुद्धानंद दास	
7.	मध्यकालीन संतों की परम्परा और भीम भोई के साहित्य में स्त्री स्वर	63
	डॉ. गौरी त्रिपाठी	
8.	परम्परा का अनुशीलन एवं भीम भोई का काव्य	73
	मुरली मनोहर सिंह	
9.	महिमा धर्म और भीम भोई : धर्मसत्ता का प्रतिपक्ष	78
	डॉ. अनीश कुमार	
10.	संत भाव के आदिवासी नायक	86
	डॉ. अनुपमा कुमारी	

Scanned with OKEN Scanner

11. महिमा धर्म में मानवीय मूल्यों का समावेश और भीम भोई की कविता 96
डॉ. रमेश कुमार गोहे

12. महिमा धर्म और 'भीम भोई' का कवित्व 106
डॉ. राजेश मिश्र

13. सत्य महिमा धर्म और भीम भोई 112
डॉ. लोकेश कुमार

14. जन साधारण की असाधारण आस्था और महिमा धर्म 117
डॉ. अखिलेश गुप्ता

15. मानवीय समता के प्रचारक : महिमा संप्रदाय और भीम भोई 125
डॉ. शोभा बिसेन

16. भीम भोई का जन्मकाल निर्णय 130
भक्त त्रिलोचन पटेल

17. भीम भोई का साहित्य और ओड़िशा का देशज रेनेसां 139
डॉ. कैप्टेन विष्णु देव सिंह मल्लिक

18. भीम भोई और दंतकथा 144
डॉ. जगदाळे अप्पासाहेब गोरक्ष

19. महिमा गुरु पीठ : गौरवशाली इतिहास को संजोने की पहल 148
सत्येश भट

साक्षात्कार

20. महिमा धर्म एक जनतांत्रिक धर्म है 154
(स्वामी नरसिंह दास से अखिलेश गुप्ता की बातचीत)
डॉ. अखिलेश गुप्ता

21. आस्था किसी आडम्बर की मोहताज़ नहीं है 159
(अवधूत बीरेंद्र कुमार बाबा से अखिलेश गुप्ता का संवाद)
डॉ. अखिलेश गुप्ता

भाषान्तर

22. Evolution of Mahima Dharma, Culture, and Literature 168
Dr. Ashutosh Singh

23. Spiritual Foundation of Social Reconstruction in Modern India: 188
A Reflection on Mahima Ideology
Dr. Sambit K Padhi, Subrat Kumar Padhi

Scanned with OKEN Scanner

24. Mahimā Dharma: Social Movement with the Path to Ethico Spirituality 200
Prof. Pratibha J Mishra

25. Development of Mahima Dharma in 19th Century 224
Prof. Sadhana Jain, Prof. Pratibha J Mishra

26. Relevance of Mahima Dharma in Odishan Society: 233
A Retrospective and Prospective Look
Nilakantha Panigrahi, Kritika Mishra

Scanned with OKEN Scanner

स्कूल के पुराछात्र रहे है, साथ ही साथ आपने अमेरिका, इंग्लैंड, चीन, थाईलैंड और नेपाल की अकादमिक यात्रायें भी की हैं। वाणिज्य विषय में विशेषज्ञता के साथ-साथ आपको साहित्य एवं इतिहास में गहरी रुचि रही हैं। प्रस्तुत कृति आपकी इसी रुचि का परिणाम है। आपके द्वारा बिरसा मुंडा (जनजातीय गौरव) नामक पुस्तक का 2022 में संपादन भी किया गया है।

यह किताब...

भारत वर्ष में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन स्थापित हो चुका था। अंग्रेजों की राजनीतिक सत्ता का संरक्षण पाकर ईसाई मिशनरियां खूब सक्रिय हो गई थीं। उनका प्रभाव विशेषकर आदिवासी जनजातीय इलाकों में फैलने लगा था। ऐसे ही राजनीतिक और सामाजिक वातावरण के बीच 19वीं सदी के लगभग दूसरे-तीसरे दशक में महिमा स्वामी द्वारा प्रवर्तित 'महिमा धर्म' जो न सिर्फ अपनी अंतर्वस्तु में विशुद्धतः भारतीय था बल्कि अपनी बहिर्संरचना में भी उसी भारतीयता का आवरण लिए हुए था। आदिवासी और जनजातीय अंचलों में इसने न सिर्फ धर्म के नाम पर प्रचलित आडंबरों-छुआछूत, जातिप्रथा, कर्मकांड और अवतारवाद आदि का विरोध किया, बल्कि ईसाइयत के बढ़ते प्रभाव को भी रोक दिया। महिमाधर्म का यह सबसे बड़ा ऐतिहासिक और राष्ट्रीय महत्त्व है।

धर्म और साहित्य के इतिहास में गुरु और शिष्य की ऐसी एकरूपता कहीं नहीं मिलती जैसी स्वयं महिमा स्वामी और उनके शिष्य भीमा भोई में है। भीमाभोई की काव्यात्मक प्रतिभा हिंदी के भक्त कवि सूरदास या अंग्रेजी के मिल्टन से किसी स्तर पर कम नहीं है। उनकी कविताओं में दार्शनिक गम्भीरता धर्म और दर्शन के संस्थापकों की तरह है। उनके सरोकार बड़े थे। उनकी कविताओं में उड़ीसा, छत्तीसगढ़, बंगाल के उपेक्षित तथा वंचित वर्गों की आत्मा का उजाला है। उसमें सच्ची मनुष्यता और उसकी महिमा का उद्घोष गान है। 1895 में उन्होंने सोनपुर के खलियापाली में अपने लौकिक शरीर को त्याग दिया, लेकिन तबसे आज तक उनकी कविताएं, उनकी कृतियां महिमा धर्म के कीर्ति ध्वज की तरह आज भी दीप्तमान है।

आधुनिक भारत के स्वाधीनता संघर्ष के अंतः स्वरूप और नवनिर्माण के महान स्वप्न को तबतक नहीं समझा जा सकता है, जब तक हम 18वी सदी के उत्तरार्ध से लेकर 19वीं सदी की आधी शताब्दी तक फैले इस धार्मिक नवजागरण और इन संतों की सामाजिक भूमिका को न समझ लें। यह पुस्तक इस समझ को विकसित कर सके, यही हमारी विनम्र कोशिश है।

किताबवाले
7/31, अंसारी रोड, दरियागंज

ISBN 978-93-95472-08-1